नामक संस्था स्त्री के यौन शोषण व यौन उत्पीड़न की सबसे बड़ी कार्यशाला है और विवाह इस कार्यशाला का मुक्कमल औजार है इसने स्त्री की गुलामी को मुकम्मल व स्थाई बना दिया है और वह इस वैवाहिक पारिवारिक ढांचे के खिलाफ खड़ी नहीं हो सकती है हमारी पूरी सभ्यता मनुष्य के विकास के साथ–साथ स्त्री की गुलामी का भी दस्तावेज है। इस घरेलू हिंसा कानून में महिलाओं को गुलामी से बाहर निकलने का बेहतरीन मौका दिया है आवश्यकता है उसके जागरूक होने की। जब तक वह परिवार और समाज की चेतनाशील नागरिक बनने का प्रयास नहीं करती है, वह घरेलू हिंसा से अपनी सुरक्षा नहीं कर सकेगी।"[9]

समाज में व्याप्त हिंसा समाप्त हो इसके लिए पहली शर्त यह है कि महिलाओं का साक्षर और शिक्षित किया जाना क्योंकि भारत में केवल 55 प्रतिशत महिलाएं शिक्षित हैं जबकि ग्रामीण भारत में महिलाओं की साक्षरता का प्रतिशत केवल 23 प्रतिशत है अतः कानून बनाने से काम नहीं चलेगा जब तक की महिलाओं को उसकी जानकारी न हो और यह जानकारी महिलाओं को केवल शिक्षा और शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, सुभाष, भारतीय महिलाएं, "दशा एवं दिशा", शताब्दी प्रकाशन, पटना, 2000
2. 'ग्लिम्पसेज ऑफ गर्ल्स हुड इंडिया', की रिपोर्ट, 1994
3. मानव संसाधन विकास की एक रिपोर्ट, 2000
4. नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो ऑफ इंडिया, 2012
5. आहुजा, राम, सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एण्ड नई दिल्ली, 1998
6. शर्मा, रामविलास, कार्ल मार्क्स पूँजी : राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना, खण्ड–2, प्रगति प्रकाशन, 2018
7. आहुजा, राम, वायलेंस एगेंस्ट वीमेन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एण्ड नई दिल्ली, 1998
8. बेदी, किरण, नई दुनिया, समाचार पत्र, में लेख 22.11.95
9. गुप्ता, रमणीका, स्त्री जागेगी तभी बात बनेगी, दैनिक भास्कर में लेख 30.06.2006

डॉ. अम्बेडकर के जातिवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता : सामाजिक एवं आर्थिक विकास के सन्दर्भ में

डॉ. मधुसूदन कुमार सिंह*

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं विचार वर्तमान समय के परिवेश से प्रभावित होता है और वह वर्तमान के आधार पर भविष्य की कल्पना करता है। सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत एवं समाज सुधारक डा0 अम्बेदकर की जातिवादी दृष्टिकोण भी वर्तमान परिवेश से प्रभावित तथा भविष्य की जीवन्त तस्वीर को रेखांकित करता है, जो आज का वर्तमान है। वर्तमान सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश जातिप्रथा के गिरफ्त में है। इस जाति प्रथा ने जात–पात, भेद–भाव, छुआ–छुत, अलगाववाद, नक्सलवाद जैसे गंभीर समस्याओं को जन्म दिया है। जिससे सामाजिक सद्भाव एवं राजनीतिक एकता नष्ट हुई है, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास अवरूद्ध हुआ है, और निर्धनता तथा बेरोजगारी बढ़ी है और, भाई–भतीजावाद, परिवारवाद, नक्सलवाद तथा आतंकवाद का उत्थान हुआ है। फलतः देश की सम्प्रभूता, अखण्डता तथा एकता खंडित हुई है। संसद पर हमला इसका गवाह है। एक सम्प्रभुतासम्पन्न देश का तात्पर्य होता हैः– बाह्य सुरक्षा और आंतरिक शांति आज आतंकवाद ने राष्ट्र की प्रभुता, अखण्डता तथा सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है तो नक्सलवाद ने आंतरिक शांति को भंग किया है। इसलिए डा0 अम्बेदकर के जातिवादी विचार प्रासंगिक प्रतीत हो रहे है क्योंकि वर्तमान परिवेश को दूषित करने में जाति प्रथा का प्रमुख हाथ है और डा0 अम्बेदकर जाति–प्रथा के प्रबल विरोधी थे।

डा0 अम्बेदकर मानते थे कि अपनी सभ्यता के बीच आदिवासियों को असभ्य बने रहने देने के लिए जाति–प्रथा ही उत्तरदायी है, हिन्दू लोग ज्ञान को अपने तक सीमित रखकर दूसरे को अन्धकार में रखना चाहते है वे अपनी बौद्धिक उपलब्धियों तथा सामाजिक उत्तराधिकार में उन लोंगो को भी हिस्सेदार नहीं बनाना चाहते है जो उसे सहर्ष अंगीकार करने को तैयार है यहॉ भी अम्बेदकर के विचारों की प्रासंगिकता परिलक्षित होती है। विकास का मॉडल यह बतलाता है कि विकास उसी का हो जिसे विकास की आवश्यकता है अर्थात जो पिछड़े है।

***उच्च माध्यमिक शिक्षक, उच्च विद्यालय सह इण्टर कॉलेज, नवीगंज बाजार, जिला– सीवान, बिहार**

दलित एवं आदिवासियों को विकास संबंधी योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ मिले इसके लिए पहल आरम्भ हो चुका है। स्वतंत्र भारत में विगत तिहत्तर वर्षों के दरम्यान कई योजनायें दलित एवं आदिवासियों के लिए विशेष रूप से बनायी गयी है, लेकिन हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता का गौरव गान गाने वाले देश की एक करोड़ से अधिक जनता इस युग में भी आदिम युग का जीवन व्यतीत कर रही है। इसलिए मिशनरियों की भाँति काम करके आदिवासियों को समुन्नत बनाने की आवश्यकता है, उन्हें अपने कटुम्बियो की भांति अपनाना, उनके साथ रहना, उठना, बैठना, उनमें परिजनों का भाव उत्पन्न करना, सारांश यह कि उन्हें हर प्रकार से स्नेह प्रदान करना होगा। इसके आभाव में विकास की सभी योजनाएँ पूर्व की भांति असफल रहेगी।

अम्बेदकर के अनुसार– प्रजातियां ऐसे व्यक्ति–समूह है, जो पूर्णतया असहिष्णु है और अपने अनुशासन को तोड़ने वाले का बहिष्कार करके उसकी सामाजिक हत्या करने को प्रस्तुत रहती है क्योंकि जातियों को अपने सदृश्य के सामाजिक बहिष्कार का निबधि अधिकार प्राप्त है और यदि किसी व्यक्ति का सम्पूर्ण सामाजिक जीवन ही समाप्त कर दिया जाये, तो उसके जीने या न जीने में क्या अन्तर रह जायेगा? मेरे समझ में यही भावना वर्ग संघर्ष तथा नक्सलवाद को जन्म देती है।''

डा0 अम्बेदकर के जातिवादी दृष्टिकोण सिर्फ विरोधी तेवर नहीं है बल्कि उसके रचनात्मक पहलू भी है। उन्हीं के शब्दों में 'मेरे द्वारा जाति प्रथा की आलोचना सुनकर आप लोग मुझसे प्रश्न चाहेंगे कि यदि मैं जातियों के विरूद्ध हूँ तो फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है? तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, बन्धुता पर आधारित होगा।'

अम्बेदकर की दृष्टि में बन्धुता का अर्थ है भाईचारा। स्वतंत्रता का अर्थ है अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता। पराधीनता का अर्थ है 'दासता', दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है बल्कि कुछ जातियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश करना है। समता का अर्थ है समान अवसर एवं समान व्यवहार। यहाँ यह स्पष्ट है कि अम्बेदकर के आदर्श समाज की कल्पना आज कितना आवश्यक है इस तरह की सामाजिक संरचना के अभाव में आज हम पिछड़े हैं। यह वास्तविक सामाजिक संरचना है। उसके बिना प्रगति की कल्पना पूरी नहीं हो सकती है। इस संदर्भ में अम्बेदकर ने कहा–''मेरा यह निश्चित मत है कि जब तक आप अपने समाज का ढाँचा नहीं बदलते तब तक कोई उन्नति असंभव है। तब तक आप अपने समाज को न आत्मरक्षा के लिए संगठित कर सकते है और न प्रहार के ही लिए जातियों की आधारशिला पर आप

कोई निर्णय नहीं कर सकते, न तो राष्ट्र–निर्माण ही कर सकते है, न बहुमत ही बना सकते हैं। जातियों के आधार पर यदि आपने कोई ढाँचा खड़ा भी किया तो वह चटक कर रह जायेगा और टूटे बिना नहीं रह सकेगा। अतः पहला प्रयास यह हो कि सामाजिक व्यवस्था में सुधार कैसे लाया जाए और जाति प्रथा कैसे मिटे?''[2]

जाति प्रथा को मिटाने के लिए कई तर्क दिये जाते हैं (1) उपजातियों को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि जातियों की तुलना में उपजातियों के मध्य, व्यवहारों एवं स्तर की दृष्टि से आपस में अधिकतर समानता रहती है। (2) अर्न्तजातिय भोज का आयोजन हो। लेकिन डा0 अम्बेदकर ने इन दोनों विचारों को खारिज करते हुए जाति–प्रथा को समाप्त करने के लिए अर्न्तजातिय विवाह पर जोड़ दिया। अम्बेदकर के शब्दों में ''जहाँ समाज अन्दर से नारंगी की भांति विभक्त हो, वही उसे जोड़ने के लिए नारंगी के छिलके की भाँति विवाह–बन्धन आवश्यक है अतः अन्तर्जातिय विवाह ही रोग का सही उपचार है और कोई इलाज इस जाति प्रथा की कुरीति को दूर करने की क्षमता नहीं रखता है।[3]

डा0 अम्बेदकर का विचार है कि सामाजिक सुधार किये बिना न तो राजनीतिक क्रान्ति संभव है और न ही आर्थिक विकास संभव है। इतिहास इस सिद्धांत का समर्थन करता है कि सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्तियों के बाद ही राजनीजिक क्रान्तियाँ होती है। चन्द्रगुप्त की चलायी हुई राजनीतिक क्रांति से बहुत पहले भगवान बुद्ध धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति पैदा कर चुके थे। महाराष्ट्र के साधु–महात्माओं द्वारा सामाजिक और धार्मिक सुधार के बाद ही राजनीतिक क्रांति ला सके थे। सिक्खों की राजनीतिक क्रांति के पूर्व गुरू नानक सामाजिक और धार्मिक क्रांति पैदा कर चुके थे। इस तरह स्पष्ट है किसी जाति के राजनीतिक विस्तार के लिए उसकी आत्मा और बुद्धि का उद्धार होना परम आवश्यक है। अब यदि हम वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर नजर डाले तो छोटे दल छोटे राजनीतिक पार्टियों की संख्या में वृद्धि, गठबंधन की कमजोर सरकार, यह सब राजनीति अस्थिरता के उदाहरण है जिसका मूल कारक सामाजिक सूधार के बिन राजनीतिक क्रांति का प्रयास है। डा0 अम्बेदकर का विचार यहाँ प्रासंगिक प्रतीत होता है। स्थायी विकास के लिए स्थिर सरकार का होना आवश्यक होता है और यह तब संभव है जब सामाजिक संरचना में सुधार के बाद राजनीतिक चेतना विकसित की जाए। आर्थिक विकास को आज कल सामाजिक न्याय से जोड़ कर देखा जाता है और न्याय–संगत विकास को ही वास्तविक विकास माना जाता है। आमर्त्य सेन का विचार है कि सामाजिक समस्याओं के निराकरण किये बिना आर्थिक विकास संभव नहीं है। यह सर्वथा सत्य भी है कि विकास का अर्थ बड़े शहर में बड़ा मकान

मात्र नहीं है। विकास को देखना है तो सामाजिक दर्पण में देखा जाना चाहिए। डा0 अम्बेदकर इस तथ्य का समर्थन करते है वे सामाजिक परिवर्तन में मुख्य बाधा जाति–प्रथा को मानते है। अम्बेदकर का भी मानना है कि सामाजिक विकास के बिना आर्थिक विकास संभव नहीं है और यदि यह संभव हुआ भी तो स्थिर नहीं हो सकता है। इस संदर्भ में अम्बेदकर समाजवादी विचारों का खण्डन करते है। यूरोपीय समाजवादीयों की विचार धारा का अन्धानुकरण करते हुए भारतीय समाजवादी भारतीय समस्याओं का समाधान भी इतिहास की आर्थिक व्याख्या में ढूंढने का प्रयत्न करते है कि मनुष्य एक अर्थोपरजीवी प्राणी है, अर्थ ही उसकी सारी योजनाओं, आकांक्षाओं व क्रिया–कलापों का केन्द्र बिन्दु है। उनकी दृष्टि में सम्पत्ति ही शक्ति का एक मात्र स्रोत्र है। अम्बेदकर का मत है कि समाजवादियों का यह विचार भारत में मिथ्या सिद्ध होगा; क्योंकि यहाँ अर्थ ही मनुष्य के प्रेरणा का एक मात्र स्रोत नहीं है। आर्थिक सत्ता ही एक मात्र सत्ता नहीं है। भारत में दैविक सत्ता प्रमुख है धर्म और सामाजिक स्थिति भारतीयों की प्रेरणा एवं शक्ति के प्रमुख स्रोत है जिससे समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग की स्वतंत्रता को नियंत्रित कर सकता है। समाजवादियों की कल्पना के आर्थिक सुधार तभी संभव है जब क्रांति के द्वारा सत्ता पर अधिकार कर लिया जाए और सत्ता भी सर्वहारा वर्ग के अधिकार में आनी चाहिए। इस संदर्भ में प्रश्न उठता है कि क्या भारतीय समाज के लोग इस उद्देश्य के लिए एक मंच पर इकट्ठा हो पायेंगे जो विभिन्न जातियों में बटे हुए है। यदि सर्वहारा वर्ग संगठित होकर एक मोर्चा नहीं बना सकता तो कोई क्रांति कैसे संभव हो सकती है? यदि किसी चमत्कार के कारण समाजवादी शासन स्थापित हो जाता है तो उसके बाद भी क्या भारत की विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था की देन जातिवाद की समस्याओं से उनका पीछा छूट जायेगा। इस संदर्भ में डा0 अम्बेदकर के शब्द ''मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता कि भारतीय जनता के ऊँच–नीच, छूत–अछूत में बांटने वाली मनोवृत्ति और इससे उत्पन्न समस्याओं का निराकरण किए बिना कोई भी समाजवादी शासन भारत में क्षण भर भी टिक सकेगा।''[4]

इस तरह सच्चे अर्थों में समाजवाद के अवतरण के लिए सर्वप्रथम सामाजिक सुधार करना होगा और जातिवाद को समाप्त करना होगा। इसके रहते समाजवादी क्रांति संभव ही नहीं है। यदि हो भी जाय तो बाद में जातिवाद उसे टिकने नहीं देगा। संक्षेप में; हम कह सकते हैं कि भारत में जातिय समस्या का निराकरण किए बिना हम न तो राजनीतिक सुधार ही ला सकते है और न आर्थिक क्रांति ही। इस प्रकार आज वर्तमान 21वीं शताब्दी में भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के संदर्भ में जातिपरक विचार सर्वथा सार्थक तथा प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. डा0 अम्बेदकर ''जाति भेद का उच्छादन'', गौतक बुक सेन्टर, 2006
2. डा0 अम्बेदकर : प्रदेश दलित जाति सम्मेलन का भाषन, मुम्बई 1 नवम्बर 1925
3. डा0 अम्बेदकरः राईटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खंड–2 महाराष्ट्र संख्या–1987
4. डा0 अम्बेदकरः एन्निहिलेशन ऑफ कास्ट, भीम पत्रिका पब्लिकेशन, जलन्धर सिटी पंजाब, 1968.
5. शंभुनाथ (संपादक) : ''सामाजिक क्रांति के दस्तावेज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
6. बेटल अनडेयः कास्ट कलास एण्ड पॉवर ओ.यू.पी. बम्बई 1966

डा0 इन्द्रभूषण सिन्हा, पी–एच.डी थैसिस डा0 बी.आर. अम्बेदकर की लोकप्रशासकीय विचारधाराः 1998